आर.एन.आई. रजि० नं० HRHIN/2003/10425
डाक पंजीकरण संख्या : RTK/10/2014-16

सृष्टि संवत् 1960853116
विक्रम संवत् 2072
दयानन्दाब्द 192

सेवा में,

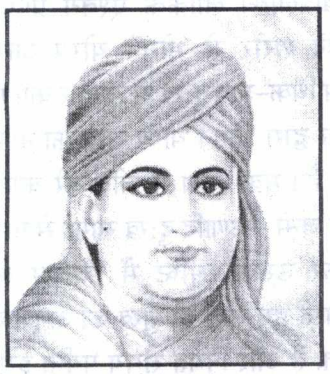

महर्षि दयानन्द सरस्वती

E-mail : aryapsharyana@gmail.com
Website : www.apsharyana.org

ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र दूरभाष : 01262-216222, Mob. 8901387993
विदेश में वार्षिक शुल्क : 75 डॉलर विदेश में आजीवन शुल्क : 300 डॉलर सम्पादक : मा० रामपाल आर्य

वर्ष : 12 अंक : 19 रोहतक, 14 अक्तूबर, 2015 वार्षिक शुल्क : 150/- आजीवन 1500/-

आजादी से पूर्व आर्यसमाज की छवि

❑ देशराज आर्य, सेवानिवृत प्रधानाचार्य

भारत की स्वाधीनता से पूर्व आर्यसमाज में अनगिनत संख्या में ऐसे महापुरुष थे, जिन्होंने आजादी संघर्ष में अपने प्राणों तक की बाजी लगा दी थी। उनमें से कईयों ने महर्षि दयानन्द के दर्शन किये थे। कुछ ऐसे भी जिन्होंने स्वयं तो नहीं परन्तु उनके पूर्वजों ने महर्षि के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त किया था। उन लोगों ने महर्षि के जीवित रहते हुए तथा उनके चले जाने के बाद आर्यसमाज का कार्य निर्बाध रूप से नि:स्वार्थ भाव से किया। जिन्होंने महर्षि को देखा था उनका जीवन बदल गया था या कहें कि कायाकल्प हो गया था। उन दिनों आर्यसमाज का सदस्य बनना बड़े गौरव व मान-प्रतिष्ठा की बात समझी जाती थी। महर्षि ने आर्यसमाज के सदस्य उन्हीं लोगों को बनाया जो उनकी कसौटी में खरे थे और यह परम्परा उनके चले जाने के बाद भी चलती रही। उन लोगों में एक विशेष प्रकार की धुन जागृत हो गई थी कि आर्यसमाज मूर्तिपूजा का खण्डन करता है, वेद को ईश्वर द्वारा प्रदत्त ज्ञान मानता है। अंधविश्वास, जाति-पांति तथा ऊँच-नीच का भेदभाव नहीं मानता, इसलिए उस समय पहली बार लोगों का ध्यान इस ओर आकृष्ट हुआ था, समाज में एक प्रकार से नवजागरण हुआ था। जो भी आर्यसमाज में शामिल होता था स्वयं को गौरवान्वित समझता था। एक लहर-सी चली हुई थी और चर्चा होती थी कि एक सौम्य आकृति वाला दयानन्द नाम का संन्यासी संस्कृत बोलता है, वेद को ईश्वर की वाणी मानता है। अंधविश्वास, ढोंग, पाखण्ड और मूर्तिपूजा का खण्डन करता है। पहली बार इन बातों को सुनकर लोगों में जिज्ञासा होती थी। उस समय के आर्यसमाजी महर्षि के बताये सिद्धान्तों पर अक्षरस: चलते थे। उन सब में समाज सेवा भावना का ही लक्ष्य था।

देशराज आर्य

इसके बाद उन आर्य महापुरुषों का जीवन धन्य हुआ जिन्हें महर्षि के दर्शन करने वाले महानुभावों का सान्निध्य प्राप्त हुआ। आर्यसमाज के इतिहास में यह दूसरी पीढ़ी मानी जाती है। बीसवीं सदी के प्रारम्भ में आर्यसमाज पूर्ण रूप से युवावस्था की अंगड़ाई लेने लग गया था। समाज में एक विशेष प्रकार की जागृति उत्पन्न हो गई थी। पुरानी परम्पराओं, रूढ़ियों एवं अंधविश्वास को तोड़ते हुए एक नई सुधारवादी विचारधारा बनने लगी थी एक प्रकार से समाज का पुनरुत्थान प्रारम्भ हो गया था। उस समय के विख्यात हिन्दी भाषा के लेखकों पर भी आर्यसमाज की विचारधारा का प्रभाव छाया हुआ था। बेशक कुछ लेखक आर्यसमाज से नहीं जुड़े थे परन्तु उन्होंने अपने साहित्य लेखन कार्य में यत्र-तत्र प्रसंगवश आर्यसमाज के सुधारवादी आन्दोलन विचारधारा का जिकर किया है। आचार्य चतुरसेन शास्त्री का जन्म 1891 में हुआ परन्तु उन्हें उनके पिता श्री केवलराम से आर्यसमाज की शिक्षा घुट्टी में मिली। चतुरसेन शास्त्री ने अनेक कहानियां, उपन्यास एवं नाटक लिखे। उन्होंने अपने कई उपन्यासों में आर्यसमाज की प्रशंसा में कई प्रकरणों में यत्र-तत्र संकेत दिये हैं। उन्होंने यह लिखा है कि उनके पिता ने महर्षि दयानन्द के दर्शन कर्णवास में किये थे तथा महर्षि का उपदेशामृत भी सुना था। आचार्य जी लिखते हैं कि उनके पिता कम पढ़े-लिखे थे। वे कट्टर आर्यसमाजी बन गये थे। उनमें बड़ा जोश था। वे वक्ता तो नहीं थे, परन्तु 10, 20 लोगों को अपने दबदबे से आर्यसमाज की विचारधारा मनवाने में सक्षम थे। डीलडौल विशाल था, लाठी चलाने में माहिर थे। जरूरत पड़ने पर वे अपने नालदार चमरोधे जूतों से ही चार-पाँच आदमियों को सबक सिखाने में दक्ष थे। वे अवसर पाकर मठ, मन्दिरों से मूर्तियों को उठाकर कहीं नदी तालाब के पानी में बहा देते थे। पिता के संस्कार आचार्य में भी रहे तथा इन्होंने अपने साहित्य में जहां-तहां आर्यसमाज की सुधारवादी विचारधारा का प्रसंगवश जिकर किया है।

इसी समय में गुरुदत्त ने भी हिन्दी साहित्य में अनेक रचनाएं लिखीं। गुरुदत्त के पिता एवं भाई तो आर्यसमाज लाहौर के सदस्य भी रहे थे तथा गुरुदत्त स्वयं डी.ए.वी. आर्य हाईस्कूल में पढ़ते थे। उन्होंने लिखा है कि उस समय पंजाब में आर्यसमाज और आर्यसमाज का डी.ए.वी. स्कूल तथा कॉलेज देशभक्ति सिखाने वाली संस्थाएं समझी जाती थीं। गुरुदत्त के साहित्य में देशभक्ति एवं समाज-सुधार की बातें मुख्य रूप से मिलती हैं। इन्होंने बचपन से आर्यसमाज के सुधारवादी कार्य देखे थे तथा इनके विचारों में भी देशभक्ति का जज्बा बन गया था। गुरुदत्त की पुस्तकों से आर्यसमाज की अनेक नई जानकारियां प्राप्त होती हैं। आर्यसमाज के इतिहास को सुदृढ़ बनाने हेतु आचार्य चतुरसेन एवं गुरुदत्त द्वारा लिखे

क्रमशः पृष्ठ 7 पर...

॥ ओ३म्॥

गुरुकुल झज्जर का स्थापना शताब्दी समारोह

सभी आर्यजनों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि गुरुकुल झज्जर का शताब्दी समारोह तपोनिष्ठ आचार्य बलदेव जी की अध्यक्षता में बड़ी धूमधाम से 12, 13 मार्च 2016 (शनिवार, रविवार) को मनाया जा रहा है।

इस अवसर पर बड़े-बड़े राजनेता, संन्यासीगण, विद्वान् व प्रसिद्ध भजनोपदेशकों को आमंत्रित किया जाएगा।

आप सभी आर्यजनों से नम्र निवेदन है कि इस शताब्दी समारोह में उपस्थित होकर धर्मलाभ प्राप्त करें।

निवेदक :

विद्यार्यसभा, गुरुकुल झज्जर मो०नं० 9416055044

124 सम्पादक
साप्ताहिक, 15
नई दिल्ली-11

ओ३म् विश्वानि देव सवित
परासुव। यद् भद्रं तन्न अ
(यजुर्वेद 30/3)

णों का परित्याग

❑ स्वामी वेदरक्षानन्द सरस्वती, संरक्षक-आर्ष गुरुकुल कालवा

अर्थ-हे सकल जगत् के उत्पत्ति-कर्त्ता, समग्र ऐश्वर्ययुक्त, शुद्ध स्वरूप सब सुखों के दाता परमेश्वर! आप कृपा करके हमारे सम्पूर्ण दुर्गुण, दुर्व्यसन और दु:खों को दूर कर दीजिये। जो कल्याणकारक गुण, कर्म, स्वभाव व पदार्थ हैं, वह सब हमको प्राप्त कीजिये।

जीव मानव योनि पाकर अपने कर्म करने में सर्वदा स्वतन्त्र और इनका फल भोगने में परमेश्वर की व्यवस्था में परतन्त्र अर्थात् ईश्वराधीन रहता है। इस प्रकार वह सत्कर्म और दुष्कर्म स्वतन्त्रता से करता है। सत्कर्म अर्थात् पुण्य कर्म ही सदा करने चाहियें, इसका स्वरूप विद्यादि शुभगुणों का दान, सत्यभाषणादि सत्याचार, प्रीतिपूर्वक, न्यायानुसार, धर्मयुक्त व्यवहार और सब जीवों का परोपकार करना है। 'सबसे प्रीति पूर्वक धर्मानुसार वर्तना', 'सत्य के ग्रहण और असत्य के छोड़ने में सदा उद्यत रहना', 'सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य व असत्य को विचार करके करना', 'अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि' में इस प्रकार सर्वदा संसार का उपकार करने अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करने में अपना तन-मन-धन सर्वस्व लगाना आदि पुण्य के कर्म हैं। इनसे सुख मिलता है क्योंकि उत्तम कर्म पुण्य से कुछ भी दु:ख नहीं होता। जो पुण्य से उल्टा अर्थात् विद्यादि शुभगुणों से लोगों को वंचित रखना, मिथ्या भाषणादि, दुराचार, द्वेष अन्याय, पक्षपात से अधर्मयुक्त व्यवहार और सब जीवों को कष्ट पहुँचाना होता है, वह पाप या दुष्कर्म कहाता है। इसका परिणाम सदा दु:ख है।

दशधा पाप:-मनुष्य तीन प्रकार शरीर, वाणी और मन से पाप करता है। शारीरिक पाप चार प्रकार का है-हिंसा, प्राणाघात, चोरी और व्यभिचार-परस्त्री गमन या परपुरुष संयोग। ये कायिक पाप भी कहते हैं। वाचिक पाप तीन प्रकार का है-असत् प्रलाप-असम्बन्ध भाषण, चुगली करना और असत्य भाषण। मानसिक पाप तीन प्रकार के हैं-परधन की अभीप्सा, दूसरे से द्वेष (वैर) करना, नास्तिकता।

इस प्रकार की प्रवृत्ति दशधा होती है। वेद से लेकर पृथ्वी जो यह जगत् है, जो-जो सब ईश्वर के नित्य सामर्थ्य से ही प्रकाशित हुआ है। ईश्वर सबको उत्पन्न करके सब में व्यापक होके अन्तर्यामी रूप से सबके पाप-पुण्यों को देखता हुआ पक्षपात छोड़के सत्य न्याय से सबको यथावत् फल दे रहा है। ऐसा निश्चित जानकर ईश्वर से भय करके सब मनुष्यों को उचित है कि मन, वचन और शरीर से पापकर्मों को कभी न करे। ईश्वर सबके अन्त:करण के कर्मों को देख रहा है। इसलिए पापकर्मों का आचरण मनुष्यों को सर्वथा छोड़ देना चाहिए।

'यद् भद्रं तन्न आ सुव'-भद्र शब्द विशेष अर्थ को देता है-भद्र शब्द की निरुक्ति है-'भयं दृणाति' भय का द्रावण। द्रावक-नाशक। सुख की वह स्थिति जिसमें जीव भय से सर्वथा उन्मुक्त रहे। भय का कारण पाप अधर्म तथा दु:ख होता है। इसके मिटने से दु:ख दूर होकर 'निवृत्ति' या सुख प्राप्त होता है, यही भयरहित दशा भद्र प्राप्ति है, पाप और दु:ख भवचक्र में ग्रस्त प्राणी को होते हैं, भवचक्र तब रहता है जब तक जन्म-मरण की श्रृंखला नहीं टूटती। दृष्ट जन्म-मरण प्रथम और अन्तिम नहीं।

इस प्रकार मनुष्य इस जन्म और अन्य जन्म और अन्य जन्मों में भी पाप-पुण्य के सुख-दु:ख भोगना कहते हैं। पुण्य करके मनुष्य पहले अपना वर्तमान जन्म और अन्य सुधारता है, इसी को ऐहिक और आमुष्मिक या इहलौकिक पारलौकिक सुखप्राप्ति कहते हैं। इहामुत्र प्राप्तव्य सुख-भोग का नाम ही अभुदय प्राप्ति है। अर्थात् जीव का अभ्युदय वर्तमान और आगामी जन्म-जन्मान्तरों तक होता है। इसमें शरीर रहता है। फिर जब जन्म-जन्मान्तरों में दु:ख की अपेक्षा अधिक सुख भोगता है, ऐसी स्थिति में पहुंच जाता है। जबकि उसके कर्मों का क्षय हो जाता है, उस समय उसे 'नि:श्रेयसाधिगम' जन्म-मृत्यु के दु:ख से रहित धर्म का लाभ होता है। अब शरीर नहीं रहता। इस प्रकार अभ्युदय और नि:श्रेयस सुख की प्राप्ति का नाम भद्र प्राप्ति है। योगदर्शन में वर्णित दृष्ट-इन्द्रियगम्य सुख का नाम अभ्युदय और आनुश्रविक श्रुति प्रतिपादित वेद सिद्ध सुख का नाम 'नि:श्रेयस' कह सकते हैं।

भद्र प्राप्ति-जीव जन्म-मरण के चक्र में फंसकर सांसारिक सुखों को भोग और जन्म-मरण चक्कर से दूर मोक्ष सुख अनुभव करता है। इस प्रकार सुख दो प्रकार का है। 1. एक जो सत्यविद्या की प्राप्ति में अभ्युदय अर्थात् इस जन्म में चक्रवर्ती राज्य, इष्ट, मित्र, धन, स्त्री और शरीर से अत्यन्त उत्तम सुख का होना। 2. दूसरा नि:श्रेयस सुख है, जिसको मोक्ष कहते हैं, जिनमें ये दोनों सुख होते हैं, उसी को भद्र कहते हैं अर्थात् व्यावहारिक सुखोपलब्धि लौकिक ऐश्वर्य प्राप्ति आदि शरीर से भोगने योग्य और परमार्थिक-पाप दु:ख से छूटकर कारण शरीर द्वारा भोगने योग्य सुख का नाम भद्र है। मुक्त दशा में जीव बुरे काम तथा जन्म-मरणादि दु:ख सागर से पार होकर उसकी सृष्टि में स्वेच्छा से विचरते हुए सुख ही सुख का अनुभव करता है और नियत समय पर्यन्त इस मुक्ति सुख को भोग जब मुक्ति की अवधि पूरी हो जाती है, तब महाकल्प के पश्चात् वहां से छूट पुन: संसार में आता है। मुक्ति के समय के मध्य में संसार में नहीं आना पड़ता।

हे प्रभो! आनन्ददाता, ज्ञान हमको दीजिये।
शीघ्र सारे दुर्गुणों को, दूर हमसे कीजिये॥
लीजिये हमको शरण में, हम सदाचारी बनें।
ब्रह्मचारी, धर्मरक्षक, वीर, व्रतधारी बनें॥
कार्य जो हमने उठाये, आप की ही आस से।
ऐसी कृपा करिये प्रभो, सब पूर्ण होवें दास से॥

हिण्डौन सिटी में चार आर्य विद्वानों का सम्मान

हिण्डौन सिटी। सन् 1983 से आर्य विद्वानों को सम्मानित करने के क्रम में इस वर्ष श्री घूडमल प्रहलादकुमार आर्य धर्मार्थ न्यास, हिण्डौन सिटी (राज०) द्वारा तीन आर्य विद्वानों का भावभीना सम्मान किया गया।

बत्तीसवाँ श्री घूडमल प्रहलादकुमार आर्य साहित्य सम्मान आचार्य डॉ. रामनाथ वेदालङ्कार के पुत्र श्री विनोदचन्द्र विद्यालङ्कार, ज्वालापुर, तृतीय वेदरत्न स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती साहित्य सम्मान श्री सोमदेव शास्त्री, मुम्बई, प्रथम आचार्य डॉ. रामनाथ वेदालङ्कार साहित्य सम्मान उड़िया-अंग्रेजी के लेखक श्री प्रियव्रतदास, भुवनेश्वर को तथा प्रथम श्री हरगोविन्द सत्यवती आर्या न्यास द्वारा प्रथम श्री हरगोविन्द सत्यवती आर्या स्मृति सम्मान श्री ब्रजपाल शर्मा 'कर्मठ' कम्हेडा को छह प्रान्तों से आये आर्यजनों की श्रद्धापूर्ण अभिव्यक्ति के मध्य भेंट किया गया। आप चारों को पुष्पमालाओं से प्रतिनिधियों ने लाद दिया।

सम्मान के अन्तर्गत प्रत्येक को 21,000/- इक्कीस सहस्र रुपये की राशि, शॉल, मोतियों की माला तथा चित्तौड़गढ़ (राज०) के विजय स्तम्भ की प्रतिकृति भेंट की गई। विद्वानों ने अपने उद्गारों में इसे देव दयानन्द की दृष्टि का सम्मान मानते हुए आभार व्यक्त किया।

इस अवसर पर पतञ्जलि योगपीठ से पधारे आयुर्वेदाचार्य श्री बालकृष्ण ने चारों विद्वानों को स्मृतिचिह्न भेंट किये। आपने कहा पतञ्जलि के मूल में ऋषि दयानन्द की भावना काम कर रही है। हम वेद व दयानन्द के भावों का प्रसार अपने तरीके से कर रहे हैं। आर्यसमाज एकमात्र ऐसा आध्यात्मिक संगठन है जो राष्ट्रवाद की बात करता है।

—प्रभाकरदेव आर्य

उद्घाटन समारोह निमन्त्रण

दर्शन योग महाविद्यालय, रोजड़ की सुन्दरपुर शाखा का उद्घाटन समारोह 1 नवम्बर 2015 को प्रात: 8 से 10 बजे माननीय पूज्य आचार्य बलदेव जी प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली द्वारा महात्मा प्रभु आश्रित कुटिया सुन्दरपुर रोहतक में होगा। इस कार्यक्रम में स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक, निदेशक, स्वामी ब्रह्मविदानन्द जी सरस्वती प्रधानाचार्य, स्वामी आशुतोष जी परिव्राजक आदि विद्वान् उपस्थित होंगे। इस कार्यक्रम में आप सादर आमन्त्रित हैं।

निवेदक : **वानप्रस्थ निगम मुनि** (पूर्व नाम रणवीरसिंह बल्हारा) प्रबन्धक, दर्शन योग महाविद्यालय महात्मा प्रभु आश्रित कुटिया, सुन्दरपुर, रोहतक

॥ ओ३म् ॥

पवित्रता व शक्ति

-: वेद-मन्त्र :-

आपवस्व हिरण्यवदश्ववत्सोम वीरवत्।
वाजं गोमन्तमाभर स्वाहा॥ 63॥ (यजुर्वेद)

यह प्रभु का सोम नाम से स्मरण करता है। यह सोम शरीर में वीर्य का भी प्रतिपादक है। यज्ञियवृत्ति से शरीर में इस सोम की रक्षा होती है। इस सुरक्षित सोम से हम अन्ततः उस सोम—'प्रभु' को प्राप्त करने वाले बनते हैं। इस सोम से यह कश्यप-पश्यक-प्रभुद्रष्टा प्रार्थना करता है कि—1. **सोम**=हे शान्त, ज्ञानमय प्रभो! **आ पवस्व**=आप हमारे जीवन को सर्वथा पवित्र कर दो। 2. और **वाजम्**=उस शक्ति को **आभर**=हम में सर्वथा भर दो जो (क) **हिरण्यवत्**='**हिरण्यं वै ज्योतिः**'=ज्ञान से युक्त है। हमारी शक्ति के साथ ज्योति का समन्वय हो। (ख) **अश्ववत्**=(अश्नुते कर्मसु) जो शक्ति कर्मों में व्याप्त होने वाली है। हम क्रियाशील हों। (ग) **वीरवत्**=हमारी वह शक्ति वीरता वाली हो (वि+ईर) कामादि शत्रुओं को विशेषरूप से दूर भगाने वाली हो। (घ) **गोमन्तम्**=(गावः इन्द्रियाणि) हमारी वह शक्ति उत्तम इन्द्रियों वाली हो। 3. **स्वाहा**=इस शक्ति की प्राप्ति के लिए हम स्वार्थत्याग करते हैं।

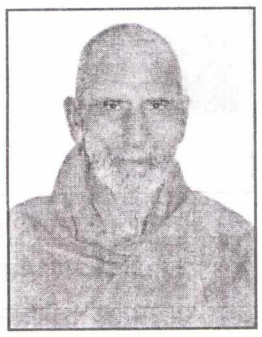

पूज्य आचार्य बलदेव जी

भावार्थ—हमारा जीवन पवित्र हो। हमें शक्ति प्राप्त हो जो ज्योति, क्रिया, वीरता व प्रशस्तेन्द्रियता से युक्त है।

अनुभव कीजिये

जब तेरा जीवन पवित्र हो जायेगा।
कृपा भण्डार ईश्वर का खुल जायेगा॥
अपवित्रता से गर तू हड़प भी जायेगा।
नष्ट जीवन वह तेरा कर जायेगा॥
पीढ़ी-दर-पीढ़ी फल उसका भुगतना पड़े।
नहीं शान्ति बिना पवित्रता के मिले॥
पवित्रता का मार्ग तो केवल योग है।
हेतु पवित्रता का सब जानें भोग है॥
क्षणिक सुख के लिए भोगी खिलखिलाता है।
परिणाम में सड़ता हुआ वहीं चिल्लाता है॥

—आचार्य बलदेव

वैदिक सत्संग मण्डल समिति की बैठक सम्पन्न

झज्जर, 6 अक्तूबर, 2015। वैदिक सत्संग मण्डल समिति रजि० की कार्यकारिणी की बैठक समिति कार्यालय में आयोजित की गई जिसकी अध्यक्षता समिति अध्यक्ष पं० रमेशचन्द्र कौशिक ने की। समिति ने सर्वसम्मति से निर्णय लिया कि बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ व विद्यार्थियों के नैतिक, आध्यात्मिक, सामाजिक, चारित्रिक उत्थान के लिए विद्यालयों में यज्ञ-हवन-प्रवचनों के कार्यक्रम आयोजन किये जायेंगे। जिसमें प्रभावशाली बेटी व बेटों को सत्यार्थप्रकाश, गीता व अन्य जीवनोपयोगी वैदिक साहित्य देकर सम्मानित किया जाएगा। प्रथम चरण में यह कार्यक्रम 100 विद्यालयों में आयोजित किये जायेंगे, जिनमें 1100 सत्यार्थप्रकाश, गीता व अन्य जीवनोपयागी वैदिक साहित्य बेटियों को दिये जायेंगे। प्रवचनों के लिए अनेक वैदिक विद्वानों को जिनमें स्वामी धर्ममुनि, स्वामी रामानन्द सरस्वती, आचार्य राजहंस मैत्रेय, रवि शास्त्री, आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़, आचार्य बालेश्वर शास्त्री, डॉ० राजकुमार आचार्य, जिला शिक्षा अधिकारी, दिल्ली, पूर्व प्राचार्य श्री एच.एस. यादव व अनेक शिक्षाविदों द्वारा विद्यार्थियों को उद्‌बोधन किया जाएगा। बैठक में पंडित जयभगवान आर्य, भगवानसिंह आर्य, श्री द्वारकादास रिटायर्ड अध्यापक, राव रतिराम, सुभाष आर्य, श्रीमती सीता देवी, श्रीमती मन्जू सैनी हाजिर रहे।

—रमेशचन्द्र कौशिक, अध्यक्ष

आर्य युवा प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

पानीपत। राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय गांव राजाखेड़ी पानीपत में 5 अक्तूबर से चल रहे आर्य युवा प्रशिक्षण शिविर का 9 अक्तूबर 2015 को यज्ञ के साथ सम्पन्न किया गया। इस शिविर में युवाओं और बच्चों को आर्यसमाज के बारे में बताया गया और आचार्य अभय जी ने बच्चों को नशे से दूर रहकर अनुशासन व शिष्टाचार में रहने का संदेश दिया और आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। इस कार्यक्रम में उन्होंने यज्ञ की महिमा का वर्णन करते हुए उनके दैनिक जीवन में होने वाले लाभों के विषय में बताया और घर में दैनिक यज्ञ करने का संकल्प दिलवाया और 6 दिसम्बर 2015 को पानीपत में होने वाले आर्य युवा महासम्मेलन में बढ़-चढ़कर भाग लेने के लिए प्रेरित किया तथा सम्मेलन में ज्यादा से ज्यादा युवाओं को जोड़ने के लिए प्रेरित किया।

इसी संदेश के साथ शिविर का समापन किया गया। इस अवसर पर विद्यालय के प्रधाना चार्या सुमित्रा देवी और पीटीआई कंवलजीत, मुख्य शिक्षक महावीर आर्य, डीपीई जगदीश चहल व अन्य स्कूल के अध्यापक उपस्थित थे।

वार्षिक अधिवेशन सम्पन्न

गुड़गांव। शिवाजी नगर स्थित आर्यसमाज के प्रांगण में सोमवार को आर्य केंद्रीय सभा का वार्षिक अधिवेशन डॉ. अशोक शर्मा की अध्यक्षता में सर्वसम्मति से चुनाव हुए जिसमें मास्टर सोमनाथ को लगातार तीसरी बार व संख्या के अनुसार 6वीं बार आर्य केंद्रीय सभा गुड़गांव का प्रधान चुना गया। नवनियुक्त प्रधान मास्टर सोमनाथ आर्य ने अपनी कार्यकारिणी का गठन करते हुए उप प्रधान नरेंद्रदेव कालरा, महामंत्री प्रभुदयाल चुटानी, मंत्री बलदेव कृष्ण गुगलानी, कोषाध्यक्ष नरवीर लाल चौधरी, भण्डाराध्यक्ष नरेंद्र तनेजा, प्रैस सचिव पदमचंद आर्य, लेखा निरीक्षण सीआर कटारिया को जिम्मेवारी सौंपी। नई कार्यकारिणी का गठन करने के बाद मास्टर सोमनाथ आर्य ने कहा कि जो जिम्मेवारी उन्हें सौंपी गई है, वह उसे पूरी लगन के साथ करेंगे तथा इस वर्ष होने वाले विभिन्न स्थानों पर वेद का प्रचार व प्रसार करेंगे।

गाय की महिमा

गाय पालूंगी जरूर चाहे जान चली जाए।
मैं गोपाल की संतान, गाय पालन मेरी आन।
मान रखूंगी जरूर चाहे कष्ट कोई आए। गाय पालूंगी.... ॥
मेरी गाय का दूध, जैसे अमृत की बूंद।
इसे पीऊंगी जरूर, बल बुद्धि को बढाए। गाय पालूंगी.... ॥
मेरी गाय का मूत्र, सब रोगों पै सूत्र।
रोग टालूंगी जरूर, सुख चैन मिल जाए। गाय पालूंगी.... ॥
मेरी गाय का मल, करे खेती को सफल।
खाद डालूंगी जरूर, अन्न-धन उपजाए। गाय पालूंगी.... ॥
मेरी गाय की शकल, मन भावनी सरल।
प्यार करूंगी जरूर, दुःख-दर्द मिट जाए। गाय पालूंगी.... ॥
मेरी गाय का बोल, प्यारे मीठे अनमोल।
इन्हें सुनूंगी जरूर, चित्त चैन सुख पाए। गाय पालूंगी.... ॥
मेरी गाय के लाल, उपजाए बड़ा माल।
हल मैं जोतूंगी जरूर, मिट्टी सोना बन जाए। गाय पालूंगी.... ॥
देती बछिया जो गाय, वह भी माता बन जाय।
इसे रखूंगी जरूर, गोधन बढ़ जाए। गाय पालूंगी.... ॥
करूं क्षय का मैं क्षय, मेरे देश की हो जय।
प्रण पालूंगी जरूर, चाहे देर लग जाए। गाय पालूंगी.... ॥
कहे गाय पाहि पाहि, माम् त्राहि माम् त्राहि।
त्राण करूंगी जरूर, प्राण भेंट में चढ़ाए। गाय पालूंगी.... ॥

संकलनकर्त्ता : भलेराम आर्य, ग्राम सांघी, जिला रोहतक

राष्ट्रीय थल सेना कैम्प में श्रेष्ठ प्रदर्शन कर लौटने पर गुरुकुल के साहिल का भव्य स्वागत

गुरुकुल कुरुक्षेत्र के प्रधान कुलवंत सिंह सैनी, प्राचार्य शमशेर सिंह व लेफिटनेंट श्रवण कुमार के साथ एनसीसी कैडेट साहिल।

कुरुक्षेत्र, 8 अक्तूबर, 2015। गुरुकुल कुरुक्षेत्र के एनसीसी कैडेट साहिल का बृहस्पतिवार को राष्ट्रीय थल सेना कैम्प में श्रेष्ठ प्रदर्शन कर लौटने पर भव्य स्वागत किया गया। यह जानकारी गुरुकुल के प्राचार्य शमशेर सिंह सांगवान ने दी। उन्होंने बताया कि दिल्ली में 17 से 28 सितम्बर तक राष्ट्रीय थल सेना कैम्प आयोजित किया गया जिसमें भारत के चयनित कैडेटों ने भाग लिया। इस कैम्प में गुरुकुल के साहिल ने राष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाते हुए शूटिंग में प्रथम स्थान व ओवर ऑल तृतीय स्थान प्राप्त किया। उन्होंने बताया कि साहिल ने अचूक निशाने साध कर इण्टर ग्रुप शूटिंग में रजत पदक प्राप्त कर गुरुकुल का नाम रोशन किया। प्राचार्य ने बताया कि साहिल का चयन सात शिविरों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने के बाद किया गया। उन्होंने बताया कि शूटिंग प्रतियोगिता में साहिल ने प्रथम व भारत में ऑवर ऑल प्रतियोगिता में तृतीय स्थान अर्जित किया। राष्ट्रीय थल सेना कैम्प में हरियाणा के चार जेडी कैडेट्स ने भाग लिया। गुरुकुल के प्राचार्य व प्रधान ने एनसीसी अधिकारी लेफ्टिनेंट श्रवण कुमार व साहिल को इस उपलब्धि के लिए शुभकामनाएं व बधाई दी। गुरुकुल प्रबंध समिति के प्रधान कुलवंत सिंह सैनी, प्राचार्य शमशेर सिंह व गुरुकुल के आचार्यों ने साहिल का भव्य स्वागत किया।

सत्यार्थप्रकाश की लिखित परीक्षा का आयोजन

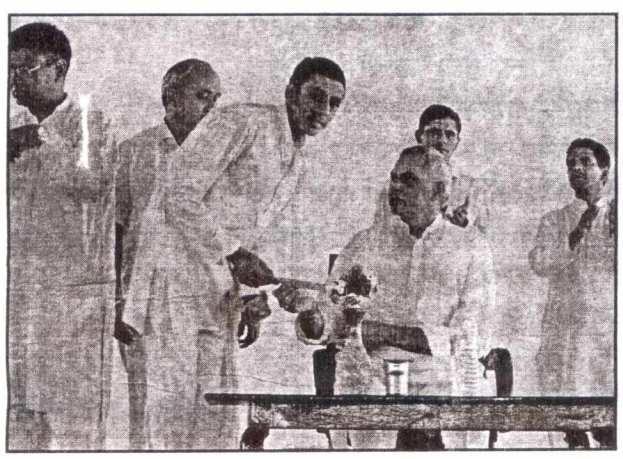

कुरुक्षेत्र। बड़े हर्ष का विषय है कि जहाँ आज **'गुरुकुल कुरुक्षेत्र'** आधुनिक शिक्षा के क्षेत्र में नए कीर्तिमान स्थापित कर रहा है, वहीं ऋषि दयानन्द के स्वप्न को साकार करने में कार्यरत है। गुरुकुल के प्रचारक गांव-गांव जाकर वेदप्रचार का कार्य कर रहे हैं। इसी शृंखला को आगे बढ़ाते हुए गुरुकुल में सत्यार्थप्रकाश की लिखित परीक्षा का आयोजन किया गया जिसमें द्वादशी विज्ञान के ब्रह्मचारी प्रशान्त आर्य ने प्रथम, द्वादशी वाणिज्य के ब्रह्मचारी जयवीरआर्य ने द्वितीय तथा नवमी कक्षा के ब्रह्मचारी दीपक आर्य ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। शैक्षिक प्रशासक कंवरजीत आर्य ने प्रथम स्थान के लिए 3,000 रुपये, द्वितीय स्थान के लिए 2,000 रुपये एवं तृतीय स्थान के लिए 1,000 रुपये के पुरस्कार दिए। इस अवसर पर महामहिम राज्यपाल हिमाचल प्रदेश आचार्य डॉ. देवव्रत ने बच्चों को पुरस्कार वितरित किए और इसी प्रकार मेहनत करने के लिए कहा।

एथेलेटिक्स प्रतियोगिता का आयोजन

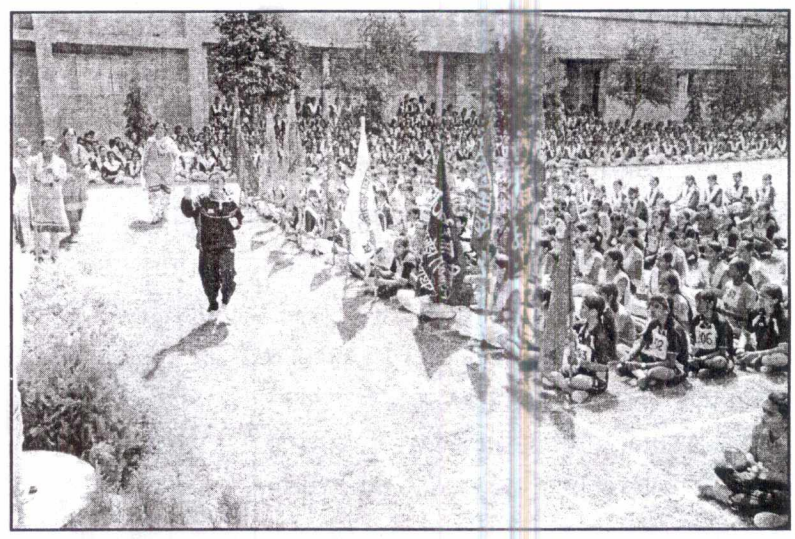

अलवर। दिनांक 8 अक्तूबर, 2015 को 60वीं जिला स्तरीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालयी 17, 19 छात्रा एथेलेटिक्स प्रतियोगिता का आयोजन आर्य बा०उ०मा०वि०, स्वामी दयानन्द मार्ग अलवर में किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि श्री मुक्तानन्द अग्रवाल जिला कलेक्टर अलवर द्वारा किया गया।

आर्य कन्या विद्यालय समिति के उपाध्यक्ष श्री अशोक कुमार आर्य, संयुक्त मंत्री श्री सुरेश दरगन, निदेशक श्रीमती कमला शर्मा ने समारोह के मुख्य अतिथि श्री मुक्तानन्द अग्रवाल-जिला कलेक्टर अलवर को माल्यार्पण कर स्वागत किया। आर्य कन्या विद्यालय समिति के मंत्री श्री प्रदीप कुमार आर्य, कोषाध्यक्ष श्री प्रद्युम्न गर्ग, प्रधानाचार्य एवं संयोजिका श्रीमती शशिबाला भार्गव ने समारोह अध्यक्ष श्री ओमप्रकाश शर्मा जिला शिक्षा अधिकारी, माध्यमिक प्रथम, अलवर को माल्यार्पण कर स्वागत किया।

समिति निदेशक कमला शर्मा ने समस्तअतिथियों का स्वागत करते हुए एवं प्रतियोगिता का परिचय देते हुए बताया कि 17 वर्षीय में 22 टीम तथा 19 वर्षीय में 22 टीम कुल 44 टीम में 352 छात्र भाग ले रही हैं। इनके उपरान्त मुख्य अतिथि द्वारा मार्च फास्ट की सलामी लेते हुए उद्घाटन की घोषणा की गई और प्रतियोगियों को अपने उद्बोधन में खेल की भावना से खेल खेलने के लिए प्रेरित किया।

24वां वार्षिक महोत्सव

गुरुकुल भैयापुर लाढौत, रोहतक

आप सभी को यह जानकर अति प्रसन्नता होगी कि आपके अपने प्रिय गुरुकुल का 24वां वार्षिक महोत्सव 8 नवम्बर रविवार 2015 को सोल्लास मनाया जा रहा है।

इस शुभ अवसर पर आर्यजगत् के प्रख्यात साधु, संन्यासी, विद्वान् तथा भजनोपदेशकों के अतिरिक्त राजनेता भी आमन्त्रित किये जा रहे हैं। इस अवसर पर गुरुकुल के ब्रह्मचारियों के विशेष आकर्षक कार्यक्रम भी देखने, सुनने को उपलब्ध होंगे।

आप सभी से साग्रह प्रार्थना है उत्सव में पधार कर सपरिवार लाभ उठायें।

निवेदक : प्रबन्धक समिति, गुरुकुल भैयापुर लाढौत, रोहतक

आर्यसमाजों के उत्सवों की सूची

1.	आर्यसमाज धनौंदा ब्लाक-कनीना (महेन्द्रगढ़)	27 से 29 अक्तू० 2015
2.	आर्यसमाज पालिका कॉलोनी भिवानी रोड रोहतक	23 से 25 अक्तू० 2015
3.	आर्यसमाज तिलक नगर, रोहतक	24 से 25 अक्तू० 2015
4.	**आर्य युवा महासम्मेलन, पानीपत** स्थान-आर्य बाल भारती पब्लिक स्कूल, पानीपत	6 दिसम्बर 2015
5.	18वां सत्यार्थप्रकाश महोत्सव सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर (राज०)	31 अक्तू० से 2 नव० 2015
6.	आर्यसमाज थर्मल कालोनी (पानीपत)	6 से 8 नव० 2015
7.	आर्यसमाज प्रेमनगर, सैक्टर-2, 6, 7, बहादुरगढ़	15 नव० 2015

—सभामन्त्री

यूज एण्ड थ्रो

❑ श्रीमती मनीषा बंसल

आधुनिक समाज में नई पीढ़ी का मूल मन्त्र है **'यूज एण्ड थ्रो'** जो वस्तु व्यर्थ लगे या मन भर जाय तो उसे फेंक दो। यही मंत्र आज माता-पिता के लिए भी सोचा जाने लगा है, यद्यपि भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता का मूल मन्त्र है, **'मातृमान् पितृमानाचार्यमान् पुरुषो वेद'**, जीवन को ज्ञानवान् बनाने के लिए माता-पिता व आचार्य ये तीन ही शिक्षक हैं। माता-पिता की सेवा करो और प्रतिपल उनसे आशीर्वाद पाओ, क्योंकि कोई भी वृक्ष अपनी जड़ों से अलग होकर नहीं पनप सकता।

अब प्रश्न उठता है कि भारत में यह सोच कहां से शुरू हुई। शायद आधुनिकता की अन्धी दौड़ के कारण या जीवन शैली के परिवर्तन से, अधिक से अधिक धन कमाने की लालसा, सम्पन्नता भरा जीवन जीने की होड़, जीवन की आपाधापी में उलझे अपनी सभ्यता व संस्कृति से भटक कर अपने माता-पिता को वृद्ध आश्रमों के हवाले कर देना। आज युवाओं के पास धन-सम्पन्नता, बढ़िया-बढ़िया कारें, कोठी, ऐशोआराम सभी कुछ है, किन्तु स्वयं उनके पास ही समय नहीं है इस ऐशोआराम को भोगने का, जीवन में शान्तिपूर्वक बैठकर जीवन का सुख भोगने का। तब उनका अपने बुजुर्गों के साथ बैठकर उनके सुख-दु:ख बांटने का या उनकी आवश्यकता का तो प्रश्न ही नहीं होता। अब युवा वर्ग की सोच केवल अपनी उन्नति तक ही सीमित हो गई है। वे सोच ही नहीं पाते कि जब वे छोटे थे, अशक्त थे, हर पल माता-पिता अपनी समस्याओं से जूझते हुए भी उनकी हर समस्या, हर कष्ट का ध्यान रखते थे। उनको अशक्त, छोटा व बोझ समझकर किसी चाइल्ड होम या आश्रम में नहीं छोड़ा। आज के परिवेश में जीने योग्य बनाया, उनकी इच्छाओं को पूरा किया।

अकेलेपन का दंश क्या होता है? यह तो समय का चक्र ही उन्हें समझाएगा। बुजुर्ग तो अब भी वृद्ध आश्रम में जाने के बाद भी अपने बच्चों की उन्नति देखकर आशीर्वाद ही देते हैं। यद्यपि उनकी इच्छा होती है कि अपने बच्चों के बीच उनकी समृद्धि देखते हुए जीवन के अन्तिम क्षण बिताने की तथा बिना कोई शिकायत किये अपने जीवन को तपाकर उन्हें समृद्ध बनाने की आज वे माता-पिता उन्हीं की ओर ताकते हैं, अपने वृद्ध जीवन को सुखद बनाने के लिए।

इस आधुनिक सोच में दोष किसका है? शायद कुछ तेजी से बदलते परिवेश का और कुछ सोच का जो उन्हें बचपन से आत्मनिर्भर बनाने के लिए माता-पिता द्वारा दिखाये गये ऊँचे-ऊँचे सपनों का, विदेशों में जाकर अधिकाधिक धन अर्जित करने की सीख का। किसी कवि ने ठीक ही कहा है—

देख सको तो देखो बार-बार देखो,
अपने जमीर को आर-पार देखो।
दूसरों पर उंगली उठाने से पहले,
खुद को आइने में उतारकर देखो॥

बचपन की शिक्षा व संस्कार से मिले विचार ने, ऊँचे-ऊँचे पद प्राप्त करने की लालसा ने, विदेशों में जाकर धन अर्जित करने की प्रेरणा ने रिश्तों का महत्त्व व प्यार को पीछे छोड़ दिया और माता-पिता भी **'यूज एण्ड थ्रो'** की श्रेणी में मान्य हो गये।

अब विचार करते हैं आज की परिस्थिति में वृद्धावस्था के अकेलेपन को अभिशाप मानने वाले उन बुजुर्गों के विषय में। प्रत्येक व्यक्ति को आयु की वृद्धि को शरीर के क्षीण होने के सत्य को स्वीकार कर लेना चाहिये। किन्तु शरीर के साथ मन कभी बूढ़ा नहीं होता। शरीर जर्जर होगा और अन्त को भी प्राप्त होगा, यह सत्य हमें स्वीकार करना होगा। हम बुढ़ापे से डरते हैं। किन्तु इस सत्य को स्वीकार करके अपनी सभी जिम्मेदारियों से निवृत्त होकर अपनी वृद्धावस्था को दीप्तियुक्त बना सकते हैं। वेद भी कहता है—

'द्युभिर्हितो जरिमा सु नो अस्तु' हमारी वृद्धावस्था दीप्तियों से युक्त हो, मंगलमय हो। **'निःऋतिः परतरम् सुजिहिताम्'** दुरावस्था दूरतर हट जाय।

इस वचन को सत्य करने के लिए पुरुषार्थ, शक्ति, सामर्थ्य व ईश्वर में श्रद्धा व लगन को बनाये रखना होगा, अपने को बच्चों पर आश्रित न मानकर स्वयं को सशक्त मानें। शारीरिक अस्वस्थता तो स्वयं को ही झेलनी पड़ती है। उसे कोई दूसरा नहीं बांट सकता। सो जितना जीवन बचा है उसे स्वस्थ रखने का प्रयास करें, भ्रमण, व्यायाम, नियमित दिनचर्या, कम व पौष्टिक आहार के द्वारा जिह्वा के स्वाद को त्याग दें, जैसा मिले उसे कम मात्रा में ग्रहण करें।

अपनी निजी जिन्दगी अवश्य रखें, जिससे दूसरों पर आश्रित न रहना पड़े। अपनी पुरानी हॉबीज़ को पुन: जागृत करें। संगीत सुनना, पुस्तकें पढ़ना, समयानुसार टी.वी. देखना, कुछ लेखन कार्य करना, छूटे हुए कला, संगीत, बागवानी का अभ्यास करना। कला का शौक है तो छोटे-छोटे ग्रीटिंग कार्ड बनाकर उन पर अच्छे-अच्छे संदेश देना। इसी तरह के अपनी पसन्द के कार्यों में अपने को व्यस्त रखें। यदि परिवार में रहना चाहते हैं तो अपने समस्त अधिकार छोड़कर समय के परिवर्तन को स्वीकार कर लें और इस सत्य को मान लें कि अब बच्चे बड़े हो गये हैं, अपने निर्णय लेने व जिम्मेदारी संभालने में सक्षम हैं। सकारात्मक सोच रखें। क्षमा की प्रवृत्ति बनायें, मन क्रोध व द्वेष की भावना न रखें। अपने दु:खों व परेशानियों का रोना हर समय न रोते रहें, स्वयं भी हर हाल में मस्त रहें और प्रसन्न रहें। यदि संभव हो तो थोड़े से सामाजिक कार्यों से अपने को जोड़ें, कहीं भी एक-दो घण्टे घर से बाहर पार्क या मन्दिर में जाकर बैठें, कुछ व्यक्तियों से मित्रता होगी। उनका सुख-दु:ख बांटिये, हंसिये और हंसाइये। ईश्वर से जुड़ने का, आध्यात्मिकता में रमने का प्रयास करें, इस सत्य को स्वीकार कर लें कि आयु के साथ शरीर क्षीण होगा ही, किन्तु मन को अस्वस्थ न होने दें। एक दिन शरीर का अन्त तो होगा ही क्योंकि ईश्वर का सिद्धान्त भी तो 'यूज एण्ड थ्रो' का ही है। शरीर का इतने वर्ष उपयोग किया अब उसे छोड़ना ही है। ठीक ही कहा है—

खुशी देखता हूँ, गम देखता हूँ,
अपनी तरफ कम देखता हूँ।
इधर इक सफर है समुन्दर से गहरा,
उधर उनकी आंख नम देखता हूँ॥

संपर्क-2/25, आर्य वानप्रस्थ आश्रम, ज्वालापुर, मो० 09760618162

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का ऋण चुकाने के लिए आर्यसमाज के आर्यविद्वानों व आर्यनेताओं की एकता जरूरी

वर्तमान समय में आर्यसमाज के सामने शराबखोरी, गोहत्या, कन्या भ्रूणहत्या, धार्मिक-पाखण्ड, अश्लीलता, भ्रष्टाचार, नारी अपमान, ऋषि ऋण चुकाना आदि अनेक समस्याएं मुंह बाए खड़ी हैं। यह सब आर्यसमाज की एकता पर ही संभव है तथा मैं व्यक्तिगत भी यही मानता हूँ। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का ऋण चुकाने के लिए आर्यसमाज के आर्य विद्वानों व आर्य नेताओं की एकता जरूरी है। एकता के बिना न तो वेदप्रचार को गति मिल सकती है और न ही सामाजिक बुराइयों के खिलाफ आन्दोलन चलाया जा सकता है।

वर्तमान में चारों तरफ हाहाकार मचा हुआ है। धार्मिक पाखण्ड व आर्य विद्वानों व आर्य नेताओं की फूट के कारण हम ऋषि ऋण चुकाने की बजाय ऋषि ऋण चढ़ा रहे हैं। अगर आर्य विद्वानों, संन्यासियों व आर्यनेता इतना सब कुछ होने के बाद भी अपने स्वार्थ व मतभेद भुलाकर आर्य विद्वान् और आर्य नेता संगठित न हुए तो आर्यसमाज के कार्यकर्त्ता व सदस्य उन पर दबाव बनाकर तथा उनको संगठित होने के लिए हर प्रकार से दबाव बनाकर बाध्य करे।

सार्वदेशिक सभा, प्रान्तीय सभा तथा स्थानीय आर्यसमाज का चुनाव सर्वसम्मति से हो ताकि आर्य विद्वान् व आर्यनेता मिलकर तथा वेदप्रचार को गति देकर बच्चों व नवयुवकों को संस्कारित व चरित्रवान् बना सके। साथ में स्वामी दयानन्द, पं० लेखराम, भगत फूलसिंह, पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी, महात्मा हंसराज, लाला लाजपतराय, नेता सुभाषचन्द्र बोस, वीर सावरकर, पं० रामप्रसाद बिस्मिल, सरदार भगतसिंह, ऊधमसिंह आदि आर्य नेताओं का अधूरा कार्य पूरा करने के लिए। वेदप्रचार को गति दें।

मेरा आर्य विद्वानों व आर्य नेताओं से नम्र अनुरोध है कि सब संगठित होकर सामाजिक बुराइयों के खिलाफ जनजागरण अभियान चलायें। आने वाली पीढ़ी यह न कहे कि हमारे आर्य विद्वान् व आर्यनेता इतने कायर व कमजोर थे। अपने व्यक्तिगत स्वार्थ में आपस में लड़ते रहे।

—वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही, संरक्षक वेदप्रचार मण्डल, जिला हिसार

जल अमूल्य निधि है, इसका सोच-समझकर प्रयोग करें, क्योंकि जल है तो कल है।

स्वास्थ्य-चर्चा....

उपवास-व्रत रखने के साधारण संकेत व लाभ

आवश्यकता-पेट तथा इसके सहायक अंगों को विश्राम देना ताकि ये सबल बने रहें। दूसरे हमारा मानव शरीर निरोग रह सके। विवेक व संयम से उपवास का लाभ उठायें।

व्रत कैसे रखें-सायं को दलिया या सुपाच्य भोजन-फल आदि खाकर रखें। इस तरहके खान-पान से आंव (अपच) पदार्थ नहीं बनेगा।

ये व्यक्ति उपवास न रखें-हृदयरोगी, टी.बी. रोगी, गर्भवती मातायें, छोटे बच्चे, कठिन काम वाले, कमजोर लोग, भस्मक रोगी तथा सीमा के रखवाले आदि।

व्रत का सम्बन्ध सेहत से साधारणतया है। सेहत ठीक रखने हेतु धर्म से जोड़ा होगा। हमारे अंग थक कर कमजोर होकर रोगी बनते हैं। सबल देह में रोग नहीं ठहर सकता, अगर शरीर से रोज जहर बाहर निकलता रहे तो अंग मजबूत रहेंगे।

धर्म हम सबका एक है। धर्म वह है जिसके अनुष्ठान से मनुष्यों का प्रत्येक दिशा में उत्कर्ष (प्रगति) हो और अन्त में मोक्ष सम्भव है।

धर्म तो पक्षपात रहित, न्यायाचरण, सत्य का ग्रहण, असत्य का त्याग, परोपकार, सत्य भाषण आदि हैं। धर्म हिम्मत वालों के लिए है। (देव दयानन्द जी)।

बिना भूख खाते रहना रोगों को बुलाना है। उपवास आधे दिन से कई दिन का या फलों का या केवल दूध पर रहकर भी कर सकते हैं।

लाभ-सभी पेट के रोग, दमा, चर्मरोग, गठिया बॉय, लकवा, बवासीर, सूजन में लाभकर है। केवल जल पर-फलों के रसों पर या तरकारियों के सूप पर, पेट के तेजाब वाले भी मीठे फलों का लें।

खोलने का ढंग-जो लें छोटी-छोटी घूंटों से या चूस-चूसकर लें ताकि मुंह की लार मिले। 100 या 150 ग्राम की मात्रा लेकर बढाते जायें। सूप या मूंग की बिना धुली दाल को पकाकर इसके पानी से या दूध से खोलें। दिन में तीन-चार बार लें, मात्रा बढ़ायें, फिर फल, सब्जी, दलिया, सूजी का खीर, घीया की खीर, लप्सी कोई एक लेते हुए पूर्ण भोजन पर आयें। मीठे के लिए धोकर किसमिस, मुनक्का, खजूर, गुड़ आदि लें। काली-हरी चाय मीठा जहर है। चबा-चबा कर खायें घूंटें नहीं बीच-बीच में जल-छाछ लें। मीठा खाने के ऊपर लें। अपने विवेक से सही तथ्य को जानें। फल व सलाद भोजन से पहले लेने में अधिक लाभ है। सलाद खाना खाने के पश्चात् लेने से दांत साफ रहेंगे।

—देवीसिंह आर्य आयु० चिकित्सक, बुआना लाखू, तह० इसराना (पानीपत)

श्रावणी उपाकर्म व षष्ठ चतुर्वेद पारायण महायज्ञ सम्पन्न

नुआपड़ा जिला स्थित गुरुकुल हरिपुर, जुनानी में श्रावणी पर्वके अवसर पर गुरुकुल में नूतन प्रविष्ट 30 ब्रह्मचारियों का उपनयन, वेदारम्भ संस्कार तथा पूजा की वास्तविकता एवं बोलबम की निरर्थकता से सम्बन्धित शिक्षाप्रद सांस्कृतिक कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर पूर्णिमा 29.08 से लेकर अमावस्या 12.09.2015 तक पर्यावरण प्रदूषण समस्या, ग्लोबल वार्मिंग की समस्या एवं अनावृष्टि-अतिवृष्टि तथा असाध्य रोगों से आज का समाज बचे तथा विश्वशान्ति व राष्ट्ररक्षा निमित्त गुरुकुल द्वारा 15 दिवसीय चतुर्वेद पारायण महायज्ञ का आयोजन किया गया। इस महायज्ञ के कार्यक्रम में श्री ए.बी. स्वामी राज्यसभा सांसद, श्री बसन्त कुमार पण्डा विधायक, नुआपड़ा, श्री प्रदीप कुमार नायक पी.डी. नुआपड़ा, मुख्य अभियंत्री बिजली विभाग नुआपड़ा, श्री प्रसन्न कुमार पाढ़ी, बी.जे.डी. अध्यक्ष नुआपड़ा, श्री घासीराम माझी कांग्रेस अध्यक्ष नुआपड़ा, श्री प्रेमकुमार आजाद अध्यक्ष वकील संघ नुआपड़ा, श्री लम्बोदर नियाल जिला परिषद् सदस्य खरियार, श्री सरोज कुमार साहू उपाध्यक्ष ओडिशा क्रिकेट एसोसिएशन, श्री विनोद कुमार जायसवाल समाजसेवी रायपुर (छत्तीसगढ़) इत्यादि अनेक गणमान्य सज्जन उपस्थित थे। यह समस्त कार्यक्रम गुरुकुल के संचालक डॉ. सुदर्शनदेव आचार्य जी के प्रत्यक्ष सान्निध्य व मार्गदर्शन तथा गुरुकुल के आचार्य श्री दिलीप कुमार जिज्ञासु, श्री राजेन्द्र कुमार वर्णी, श्री धर्मराज पुरुषार्थी तथा गुरुकुल के समस्त अधिकारीगणों के पुनीत सहयोग से सम्पन्न हुआ।

सरल आध्यात्मिक शिविर

दिनांक : 13 नवम्बर से 17 नवम्बर 2015 तक

स्थान : गुरुकुल भैयापुर लाढौत, रोहतक

शिविर आयोजक : वैदिक ज्ञान प्रसार न्यास (पंजी.) रोहतक

शिविराध्यक्ष : स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक, निदेशक दर्शन योग महाविद्यालय, रोजड़ (गुजरात)

अन्य विद्वान् : स्वामी आशुतोष जी परिव्राजक, आचार्य कर्मवीर जी योग शिक्षक, ऋषि उद्यान, पुष्कर रोड, अजमेर (राज०) व कमलेश राणा जी, महिला योग शिक्षिका, रोहतक।

प्रवेश शुल्क: 1000/- रुपये

आवेदन करने की अन्तिम तिथि 5 नवम्बर 2015

शिविर प्रवेश पात्रता

1. स्वस्थ व्यसनरहित अनुशासन में चलने वाले को प्रवेश दिया जाएगा।
2. आयुसीमा—न्यूनतम 15 वर्ष।
3. शिक्षा—न्यूनतम 10वीं कक्षा पास।

विशेष-उच्च शिक्षा प्राप्त युवक/युवतियों को शिविर में भाग लेने के लिए प्राथमिकता दी जाएगी। ब्रह्मचारियों के लिए प्रवेश नि:शुल्क होगा। अन्य छात्र एवं छात्राओं के लिए शुल्क 500/- रुपये देय होगा। शिविर में प्रवेश के लिए पंजीकरण अनिवार्य है।

आवेदन/पंजीकरण करने हेतु सम्पर्क सूत्र—

श्री हवासिंह राठी - मोबा० 09466008120

श्री कर्णसिंह मोर - मोबा० 09728884949

श्री सुगमा मुनी (पूर्व नाम श्रीमती अंगूरी देवी आर्या) - मोबा० 09812792770

निवेदक : निगम मुनि, मोबा० 9355674547

दर्शन योग महाविद्यालय की नई शाखा में प्रवेश प्रारम्भ

आर्यजगत् के महान् योगी स्वामी श्री सत्यपति जी परिव्राजक द्वारा स्थापित दर्शन योग महाविद्यालय, रोजड़ की शाखा का शुभारम्भ **1 नवम्बर 2015** को रोहतक में स्थित **प्रभु आश्रित कुटिया, सुन्दरपुर** में हो रहा है। इसमें दर्शन आदि के अध्यापन की योजना है। प्रवेश के इच्छुक ब्रह्मचारी शीघ्र सम्पर्क करें।

प्रवेश के लिए योग्यता—

प्रवेश—केवल ब्रह्मचारियों (पुरुषों) के लिए।

आयु—कम से कम 18 वर्ष।

शैक्षणिक योग्यता—कम से कम 12वीं या समकक्ष।

विशेषताएँ—

प्रत्येक ब्रह्मचारी को पक्षपात रहित भोजन, वस्त्र, दूध-घी, फल, पुस्तक, आसन आदि सभी वस्तुएँ नि:शुल्क प्राप्त होंगी। प्रतिदिन व्यक्तिगत उपासना के लिए अवसर उपलब्ध रहेगा। प्रतिदिन यज्ञ, वेदपाठ, वेदस्वाध्याय होगा। प्रतिदिन आत्मनिरीक्षण होगा। निदिध्यासन के लिए अवसर दिया जायेगा। क्रियात्मक योग प्रशिक्षण के माध्यम से विवेक-वैराग्य, मनोनियन्त्रण, यम-नियम, ध्यान, समाधि आदि विषयों का प्रशिक्षण दिया जाएगा। प्रतिदिन आध्यात्मिक उन्नति के लिए कुछ घण्टे मौन पालन का अवसर रहेगा।

विशेष-रोजड़ स्थित मुख्य शाखा में भी प्रवेश प्रारम्भ है।

सम्पर्क हेतु पता— **दर्शन योग महाविद्यालय**

प्रभु आश्रित कुटिया, सुन्दरपुर, रोहतक-124001

Mob. 7027026175, 7027026176

E-mail : darshanyogsundarpur@gmail.com,

Web : darshanyog.org

भजनोपदेशकों के लिए सभा से सम्पर्क करें—

प्रदेश की सभी आर्यसमाजें अपने आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव या अन्य विशेष कार्यक्रमों के लिए भजनोपदेशकों के प्रोग्राम सुनिश्चित करने के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक से एक मास पूर्व पत्र द्वारा सम्पर्क करें।

—सभामन्त्री

वैदिक पारिवारिक सभा द्वारा सत्संग का आयोजन

दिनांक 20.09.2015 को सायं 4 बजे से 6 बजे तक स्त्री आर्यसमाज मन्दिर में वैदिक पारिवारिक सभा द्वारा सत्संग सभा का आयोजन किया गया। श्री रमेश गांधी जी, रामपाल प्रीतम, प्रमोद लाम्बा ने भजन व अपने विचार रखे। मुख्य वक्ता के रूप में वेदप्रचार मण्डल के बौद्धिक अध्यक्ष आचार्य डॉ. प्रमोद योगार्थी ने महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन व कार्य पर विचार रखे। साथ में सत्संग के लाभ बताए। मंत्री प्रीतम राजपाल ने मंच का संचालन किया । यह सभा हिसार शहर में पारिवारिक यज्ञों द्वारा वेदप्रचार कर सराहनीय कार्य कर रही है। प्रधान जगन्नाथ आर्य जी ने सबका धन्यवाद किया। वेदप्रचार मण्डल के संरक्षक वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही आदि मंच पर उपस्थित थे।

—विजय आर्य, कोषाध्यक्ष

गांव ढढेरी में यज्ञ का आयोजन

दिनांक 21.09.2015 को सातवास खाप के प्रसिद्ध गांव ढढेरी में यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ पं० भरतलाल शास्त्री द्वारा किया गया। यज्ञ को सफल बनाने में गांव के श्री जयवीर शर्मा, मा. भरतसिंह मलिक, कुलदीप मलिक आदि का विशेष सहयोग रहा। शास्त्री जी ने यज्ञ के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए पंचमहायज्ञों की सरल शब्दों में व्याख्या की।

साथ में घरों में पारिवारिक यज्ञ करवाने का सुझाव दिया। इस अवसर पर श्री हरनारायण मलिक रामायण, सुरेन्द्रसिंह मलिक देपल, श्री सत्यपाल सिंह मलिक, बृजभान मलिक एस.डी.ओ. उमरा के अतिरिक्त गांव ढढेरी के 30-40 महिला व पुरुषों ने भाग लिया।

—वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही, संरक्षक वेदप्रचार मण्डल, हिसार

पारिवारिक यज्ञ का आयोजन

भिवानी। अनाजमण्डी भिवानी में 25.09.2015 को सायं 4 बजे मण्डल सुपरवाईजर श्री बलदीप जी सांगवान के क्वार्टर में वैदिक विद्वान् डॉ. प्रमोद योगार्थी हिसार द्वारा यज्ञ किया गया। आचार्य जी ने वेदमन्त्र द्वारा सुखी गृहस्थ जीवन जीने पर प्रकाश डाला। वेदप्रचार मण्डल जिला हिसार के संरक्षक वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही ने महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन व कार्यों पर प्रकाश डाला। साथ में आर्यसमाज क्या है, क्या चाहता है? का भी उल्लेख किया और आर्यसमाज से जुड़ने का सुझाव दिया।

इस अवसर पर श्री सतवीर सिंह पूर्व लैप्टिनेंट, श्रीमती किताबो देवी, सन्तरा देवी, सीमा देवी, शीला देवी, कृष्णा देवी, वसुन्धरा देवी आदि महिलाएं व स्कूली बच्चे उपस्थित थे।

—कुलदीप आर्य, भिवानी

'आर्य प्रतिनिधि' साप्ताहिक के ग्राहक महानुभावों की सेवा में

'**आर्य प्रतिनिधि**' साप्ताहिक निरन्तर आपकी सेवा में पहुँच रही है। हमारा हरसंभव प्रयास होता है कि इस पत्रिका में उच्च कोटि के विद्वानों के सारगर्भित लेख प्रकाशित कर आर्यसमाज तथा महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों के अनुसार प्रचार करते हुये आम जनता तक इसका लाभ प्राप्त हो। लेकिन यह तभी संभव है जब आप सबका हमें पूरा सहयोग मिले। इसलिए '**आर्य प्रतिनिधि**' के ग्राहकों से निवेदन है कि जिन '**आर्य प्रतिनिधि**' के ग्राहकों ने अभी तक अपना वार्षिक शुल्क या पिछड़ा शुल्क नहीं भेजा है, उनसे विनम्र प्रार्थना है कि वह अपना वार्षिक शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। '**आर्य प्रतिनिधि**' का वार्षिक शुल्क 150/- रुपये है और आजीवन सदस्यता शुल्क 1500/- रुपये है। इसलिये मेरी सभी ग्राहक महानुभावों से प्रार्थना है कि वह अपना शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। इसके साथ ही आर्यसमाजों के पदाधिकारियों एवं सदस्यों से भी निवेदन है कि वह अधिक से अधिक '**आर्य प्रतिनिधि**' के ग्राहक बनाने में सहयोग करें। आशा है आपका सहयोग हमें प्राप्त होगा। पत्रिका शुल्क भेजते समय फोन नंबर अवश्य लिखें।

व्यवस्थापक 'आर्य प्रतिनिधि' साप्ताहिक
दयानन्दमठ रोहतक, फोन 01262-216222

आजादी से पूर्व आर्यसमाज की.... प्रथम पृष्ठ का शेष....

गए संक्षिप्त प्रकरणों से नवीन जानकारियां प्राप्त की जा सकती हैं। ये बीसवीं सदी के प्रारम्भ के लेखक हैं तथा आर्यसमाज से प्रभावित भी थे।

हिन्दी साहित्य के एक अन्य लेखक फणीश्वर नाथ रेणु के पिता भी कट्टर आर्यसमाजी थे। यद्यपि फणीश्वर नाथ रेणु की पारिवारिक पृष्ठभूमि अलग थी। परन्तु इनके द्वारा लिखित **मैला आंचल** और **परती परिकथा** में ग्रामीण आंचल की तस्वीर एवं समाजवादी आन्दोलन की झलक एवं जमींदारी प्रथा की जानकारी के साथ सुधारवादी संदेश भी मिलता है। हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक जयशंकर प्रसाद भी आचार्य चतुरसेन व गुरुदत्त के समकालीन थे। इन्होंने भी अनेक कहानियां व उपन्यास लिखे हैं। जयशंकर प्रसाद का एक उपन्यास राजस्थान शिक्षा की बारहवीं कक्षा में **कंकाल** उपन्यास पाठ्यक्रम में था। इसमें भी तत्कालीन सामाजिक परिवेश का चित्रण है जिसमें तीर्थ नगरों के आडम्बर से परिपूर्ण जीवन का खाका खींचा गया है। इस कंकाल उपन्यास में भी आर्यसमाज के सुधारवादी आन्दोलन का कई जगह प्रकरण आता है। इससे यह स्पष्ट संकेत मिलता है कि सामाजिक कुरीतियों का खण्डन करने में आर्यसमाज की विशेष भूमिका रही है। प्रथम दृष्ट्या ये लेखक आर्यसमाज के प्रमाण रूप में तो जुड़े हुए नहीं थे परन्तु उस समय आर्यसमाज की सुधारवादी नीतियाँ जागृति का पर्याय बन गई थीं तथा जनमानस के विचार और चिन्तन में आर्यसमाज का प्रभाव जाने-अनजाने, चाहे-अनचाहे स्पष्ट दिखाई देता था। आजादी के कुछ समय बाद तक भी आर्यसमाज की प्रभावशाली छवि गांव देहात में महिलाओं के गीतों में दिखाई पड़ती थी। बचपन की धुंधली याद है कि महिलाएं ऋषि दयानन्द के गीत गाती थी-एक पंक्ति है-'**एक ऋषि दयानन्द आया हे सखी, सेवा बताई गऊ बलदां की**', एक अन्य गीत की पंक्ति-'**पढ़ा दे मेरा वीर पढ़ूंगी गुरुकुल में**'। कितना प्रभाव था उन दिनों में आर्यसमाज का। बचपन में हम सुना करते थे कि जो सत्यार्थप्रकाश पढ़ लेता है उसे रात्रि को भी श्मशान में डर नहीं लगता। ऐसी मान्यताएं उस समय थीं। हम सुनते थे कि दयानन्द एक ऐसा संन्यासी है, जिसने चारों वेद पढ़े हैं। उसने अपने बल से घोड़ा-गाड़ी को रोक लिया। ऐसी बातों की चर्चा हुआ करती थी।

एक अंग्रेजी भाषा के लेखक वी.एस. नायपाल का नाम कुछ लोगों ने अवश्य सुना होगा। नायपाल ने अपने उपन्यास-'**ए हाउस फॉर मिस्टर विश्वास**' में भी आर्यसमाज के सुधारवादी कार्यों का जिकर है। उपन्यास में शिवलोचन एवं पंकजराय भारतीय नाम के दो प्रचारक त्रिनिडाड में प्रचार करने हेतु भारत की आर्यसमाज की प्रचारक समिति द्वारा भेजने का प्रसंग दिया है। यद्यपि वहां कुछ पीढ़ियों पूर्व भारत से गए हुए लोग हैं जो ईसाई बन गए हैं। उपन्यास केवल लेखक की कल्पना होती है जिसमें किसी एक कथावाचक पर समस्त रचना की जाती है। परन्तु उसमें भी प्रसंगवश आर्यसमाज की गतिविधियों का लेखा-जोखा हो तो निश्चित रूप से उस लेखक की विचारधारा में आर्यसमाज की विचारधारा विद्यमान अवश्य होती है। साहित्यकार समाज चित्रण करने वाला पेंटर होता है तथा वह समाज में प्रचलित विश्वास और मान्यताओं का अपनी रचना में संकेत अवश्य देता है। उपरोक्त कुछ लेखकों एवं उनकी रचनाओं का संदर्भ केवल इसलिए दिया है कि उस समय आर्यसमाज एक श्रेष्ठ सुधारवादी विचारधारा एवं देशभक्ति के कारण छाया हुआ था। किसी सभा संस्था में भी आर्यसमाजी की अपनी धाक एवं अलग प्रकार की छवि होती थी। उस समय के आर्य लोग घर फूंक तमाशा देखने वाले होते थे। आर्यसमाज को कुछ न कुछ देने की ही प्रवृत्ति उनमें होती थी। काश! वर्तमान में भी ऐसे ज्यादा लोग हों तो कितना शुभ रहे।

संपर्क-म०नं० 725, सै०-4, रेवाड़ी, मो० 9416337609

आवश्यक सूचना

आर्य प्रतिनिधि 'साप्ताहिक' सभी सम्मानित सदस्यों को प्रत्येक मास की 7, 14, 21, 28 तारीख को डाक द्वारा भेजा जाता है। एक सप्ताह तक पत्र न मिलने पर कृपया फोन नं० 01262-216222, 07206865945 पर सूचना दें। धन्यवाद।

—व्यवस्थापक

शिक्षा क्षेत्र में हमारी समस्याएं

❑ डॉ० अशोक आर्य, 107, शिप्रा अपार्टमेंट, कौशाम्बी, जिला गाजियाबाद

मानव जीवन समस्याओं से घिरा हुआ है। इन समस्याओं के समाधान के लिए यह मनुष्य सदा इधर-उधर भटकता रहता है। इस प्रकार की ही समस्याओं में विद्यार्थी जीवन की अनेक समस्याओं के अन्तर्गत विद्यार्थियों के अनुशासन की भी एक भयंकर समस्या आज हमारे सामने आकर खड़ी हुई है। इस समस्या से त्राण पाने के लिए हमारी सरकार, हमारे परिवार, हमारे सम्बन्धी आदि सब प्रयत्न करते हैं किन्तु परिणाम कुछ भी नहीं निकल पा रहा क्योंकि किसी भी समस्या का निदान तब ही हो सकता है जब उसके निदान के लिए ठीक दिशा में कार्य किया जावे, उस समस्या के कारण के मूल तक जाया जावे। इसके मूल तक जावें कैसे? इसका उत्तर वह माता-पिता, जिनका अपनी सन्तान के लिए उत्तरदायित्व होता है, कहते हैं कि न तो हमारे पास समय ही है और न ही हम इस समस्या का निदान ही जानते हैं। हमने अपने बच्चे को खूब मारपीट कर देख लिया कि वह है कि बुराइयों को छाड़ता ही नहीं। डांटना, मारना, पीटना समस्या का कुछ सीमा तक तो निदान हो सकता है किन्तु यह स्थायी निदान नहीं है। यदि हम वास्तव में ही हमारे छात्रों की अनुशासन सम्बन्धी समस्याओं का निदान चाहते हैं तो निश्चय ही हमें वेद की शरण में जाना होगा क्योंकि विश्व की सब समस्याओं का निदान वेद में ही परमपिता परमात्मा ने देकर यह वेद का ज्ञान सृष्टि के आरम्भ में ही हमें दे दिया था।

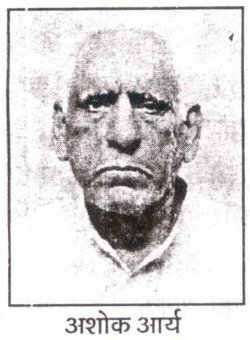

अशोक आर्य

हम विद्यार्थियों की जिस अनुशासन सम्बन्धी समस्या की चर्चा कर रहे हैं, इस समस्या ने हमारे शिक्षाविदों को अत्यधिक परेशान कर रखा है। यह समस्या हमारे शिक्षा शास्त्रियों के लिए अत्यधिक परेशानी का कारण बन गई है। जब हम अपने क्षेत्र में आने वाले समाचार-पत्रों पर दृष्टि डालते हैं तो हम पाते हैं कि यह समाचार हमारे विद्यार्थियों के काले कारनामे यथा-उद्दण्डता, लड़ाई-झगड़ों आदि, जिन्हें हम अनुशासनहीनता के नाम से जानते हैं, से भरे मिलते हैं। विद्यार्थियों की इस अनुशासन हीनता का चित्र हमें एक लेख से मिलता है जिसे 'प्राचीन भारतीय शिक्षा की एक झांकी' शीर्षक के अन्तर्गत हमारे एक महान् शिक्षाविद् डॉ. महेशचन्द्र सिंघल ने लिखा है, से मिलता है।

डॉ. सिंघल लिखते हैं कि ''आज की शिक्षा प्राचीन शिक्षा से पूर्णतया विपरीत पड़ती है। न वैसा वातावरण, न वैसे गुरु और शिष्य ही। अधिकतर विद्यालय नगरों के मध्य दिखाई पड़ते हैं। जहाँ द्यूत और कोलाहल का बोलबाला है। चारों ओर चटपटी चमकीली भड़कीली वस्तु बेचने वाली दुकानें तथा सिनेमा थियेटरों का दौर दौरा है, जिनकी ओर से आंखें बन्द कर लेना सरल काम नहीं है। आज के विद्यार्थी के कानों में चारों से अश्लील शब्द पड़ते हैं और उसकी जिह्वा पर भी अश्लील गाने चढ़े रहते हैं। वह पुस्तकें भी पढ़ता है तो प्रेम और जासूसी कहानियां वाली, जो पतन की ओर ले जाने वाली हैं।

आज गुरु-शिष्य सम्बन्ध कैसे हैं यह बताने की आवश्यकता नहीं। अध्यापक को अपनी जान बचानी कठिन हो रही है। वह छात्रों से ऐसे ही डरता है जैसे शेर से बकरी। उसके लिए मैनेजर, हैडमास्टर और छात्र ये तीनों ही अफसर हैं। यह वही भारत है जहाँ गुरु को सबसे ऊँचा पद दिया जाता था। लेकिन आज उसकी दशा दयनीय है। पाठक तनिक सोचकर देखें इस अधोगति को।''

(गुरुकुल पत्रिका श्रद्धानन्द जन्मशताब्दी अंक)

अपने इस लेख में विद्वान् लेखक ने आज के विद्यार्थी की अनुशासन हीनता और आज के अध्यापक की दयनीय अवस्था का चित्रण करते हुए यह बताने का प्रयास किया है कि आज की मैकाले शिक्षा पद्धति से हमारी गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति कहीं अधिक उत्तम ही नहीं थी अपितु वह शिक्षा-पद्धति एक प्रकार से सम्पूर्ण शिक्षा पद्धति थी। इस शिक्षा में गुरु को किसी अधिकारी का कभी डर नहीं होता था। वह अपने विद्यालय का स्वामी होता था तथा वानप्रस्थाश्रम में होने के कारण वह किसी से शिक्षा के लिए कोई धन भी न लेता था। शिक्षा दान को वह अपना कर्त्तव्य समझता था। हाँ! भिक्षा से सब विद्यार्थियों का जीवनयापन करना होता था। विद्यार्थी भिक्षा के लिए निकट के गांव अथवा नगर में जाते थे और जो मिलता था, लाकर गुर चरणों में डाल देते थे। गुरु इस भिक्षा के प्रतिफल से ही स्वयं का तथा सब ब्रह्मचारियों का भरण-पोषण करता था और कभी कोई अभ्यागत आ जाता था तो उसका भरण का कार्य भी इस भिक्षा में प्राप्त सामग्री से ही होता था।

इसके साथ ही साथ उस समय का गुरु अपने विद्यार्थियों, जिन्हें उस युग में ब्रह्मचारी कहा जाता था, को अपने अंतःवासी मानता था तथा उन सबका पालन उस प्रकार ही करता था, जिस प्रकार उसके अपने परिवार में उसके माता तथा परिजन करते थे। विद्यार्थी को पता ही न चलता था कि वह किसी गुरुकुल में है अथवा घर में। यहां सब बच्चों को समान शिक्षा और समान स्नेह मिलता था, चाहे वह राजा की संतान हो अथवा रंक की। कृष्ण और सुदामा का उदाहरण तो हम सदा देखते ही हैं। इस प्रकार की शिक्षा का ही परिणाम होता था कि विद्यार्थी गुरु आज्ञा को देवाज्ञा मानते हुए उसे पूर्ण करने के लिए अपने प्राण तक भी देने को तैयार रहते हैं। इस निमित्त हम आरुणि का उदाहरण देखते हैं, जिसने अपनी गुरु आज्ञा की पूर्ति के लिए स्वयं को सर्दी की ऋतु में उस मेंढ पर डाल दिया जहां से खेत के पानी का निकाह वह बंद नहीं कर पा रहा था। इस प्रकार के समर्पित विद्यार्थी उस काल में मिलते हैं, आज नहीं। यह ही कारण है कि उस काल के विद्यार्थी उत्तम तथा उच्च वैदिक शिक्षा के आधार पर अपने देश, अपने समाज को आगे ले जाने का कारण बनते हैं और चिन्तित भी रहते हैं। कोई भी विद्यार्थियों में निरन्तर बढ़ रही अनुशासनहीनता तथा उनकी उद्दण्डता का मुख्य कारण क्या है? इसे खोजने का यत्न नहीं करता क्योंकि मुख्य कारण की खोज के बिना हम उस समस्या का प्रतिकार नहीं कर सकते, इसलिए इसके मुख्य कारण की खोज आवश्यक है। इस कारण को खोजने का जब हम प्रयास करते हैं तो हम पाते हैं कि—

1. प्रथम कारण तो हम दूरदर्शन के अवलोकन को ही पाते हैं। दूरदर्शन पर गन्दे-गन्दे चित्रों का प्रदर्शन कराते हुए फूहड़ गाने व धारावाहिक दिखाये जाते हैं, जो विद्यार्थियों को अनुशासन से दूर ले जाने वाले होते हैं। इससे विद्यार्थी में अनुशासन हीनता आती है।

2. सार्वजनिक स्थलों पर अश्लील चित्रों का प्रदर्शन भी इसका दूसरा कारण है।

3. आज का विद्यार्थी सिनेमा का अभ्यासी हो गया है, जहां अश्लील दृश्य और अश्लील गीत ही उसे मिलते हैं।

4. आज धार्मिक और नैतिक शिक्षा का अभाव हो गया है।

5. परिवारों में भी अनुशासन नहीं रहा।

यह कुछ कारण हमें दिखाई देते हैं, जो आज के विद्यार्थी में उद्दण्डता पैदा करने वाले हैं तथा उसे अनुशासन से दूर ले जा रहे हैं। धार्मिक और नैतिक शिक्षा के अभाव में विद्यार्थी निरन्तर नैतिक पतन की ओर बढ़ रहा है। धर्म के बिना उसका जीवन लगातार गिरता चला जा रहा है। वेद तो कहता है कि यदि वेदादि शास्त्रों की शिक्षा विद्यार्थी को दी जावे तो वह निश्चय ही अपने शिक्षकों को अपने माता-पिता के समान मानते हुए उनकी आज्ञा का पालन करते तथा अपने कर्त्तव्यों की पूर्ति में अपना समय लगाते और गुरुजन भी निश्चय ही अपने विद्यार्थी को अपने पुत्र के समान मानते हुए उसे स्नेह देते हुए उसे सदाचारी बनाने का पुरुषार्थ करते लेकिन आज ऐसा नहीं है। यह सब पूर्ववत् इस प्रकार हो सके, इसके लिए हमें वेद के उपदेशों को मानना होगा। वेद इस सम्बन्ध में क्या कहता है, इसकी चर्चा हम वेद के विभिन्न मन्त्रों की व्याख्या करते हुए आगे करेंगे।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक मा० रामपाल आर्य ने दुर्गेश्वरी प्रिंटर्स, माता मन्दिर चौक, पाड़ा मोहल्ला, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001 से प्रकाशित। पत्र में प्रकाशित लेखसामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।
प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जाएगी।